संरचनात्मक - कृत्यात्मक विश्लेषण B.A. I (Hons.)

(Structural - Functional Analysis)

संरचनात्मक - कृत्यात्मक विश्लेषण, प्रणाली विश्लेषण का ही विकसित रूप है। विश्लेषण की यह पद्धति पहली बार तुलनात्मक राजनीति के क्षेत्र में न आकर नृविज्ञान के क्षेत्र में उद्गमित हुई। नृविज्ञान में इसे प्रचलित करने का श्रेय रैडक्लिफ ब्राउन तथा बी. मैलीनोस्की को जाता है और इन्ही की प्रेरणा से ये पद्धति अन्य विषयों तक विस्तृत हुई। नृविज्ञान, मनोविज्ञान एवं समाज विज्ञान से होते हुए यह राजनीति विज्ञान तक पहुंची है। तुलनात्मक राजनीति के क्षेत्र में गेब्रियल ऑल्मंड ने राजनीतिक विश्लेषण के लिए इस उपागम का उपयुक्त सैद्धांतिक ढांचा विकसित किया।

गेब्रियल ऑल्मंड ने डेविड ईस्टन द्वारा प्रतिपादित आगत-निर्गत विश्लेषण (Input-output Analysis) को अधूरा मानते हुए वर्ष 1960 में 'The Politics of the Developing Areas' नामक पुस्तक की रचना की। इस पुस्तक के अन्तर्गत इन्होंने तर्क दिया कि आगत - निर्गत वस्तुतः राजनीतिक प्रणाली के कृत्य हैं। ऑल्मंड ने न केवल इन कृत्यों का विस्तृत वर्गीकरण प्रस्तुत किया अपितु ऐसे कृत्यों को संपन्न करने वाली संरचनाओं की पहचान भी की। इस प्रकार गेब्रियल आल्मंड ने राजनीतिक - विश्लेषण के क्षेत्र में संरचनात्मक - कृत्यात्मक विश्लेषण की नींव रखी। ऑल्मंड ने चार प्रकार के आगत कृत्यों और तीन प्रकार के निर्गत कृत्यों तथा इनके साथ जुड़ी हुई संरचनाओं का पता लगाया। इन्होंने ये भी कहा कि किसी भी कृत्य के संपादन हेतु अनेक संरचनाओं की आवश्यकता हो सकती है और कोई भी संरचना अनेक कृत्यों को संपन्न करने में अपना योगदान दे सकती है। राजनीतिक प्रणाली के इस प्रतिरूप का विस्तृत निरूपण गेब्रियल ऑल्मंड और जी. बी. पॉवेल की चर्चित कृति 'Comparative Politics - A Developmental Approach' (1966) के अन्तर्गत किया गया है। इस विश्लेषण के प्रतिरूप को समझने के लिए पृष्ठ संख्या 02 पर एक रेखाचित्र बनाया गया जो अध्ययन की दृष्टि से अनिवार्य है।

Scanned with CamScanner

संरचनात्मक - कृत्यात्मक रेखाचित्र

पर्यावरण (Environment)				पर्यावरण (Environment)
आगत INPUTS	कृत्य — संरचना	राजनीतिक प्रणाली Political System	कृत्य — संरचना	निर्गत OUTPUTS
	1. राजनीतिक समाजीकरण एवं भर्ती — परिवार, मित्र मंडली, शैक्षिक और धार्मिक संस्था		5. नियम-निर्माण — विधायिका	
	2. हित स्पष्टीकरण — हित समूह		6. नियम-अनुप्रयोग — कार्यपालिका	
	3. हित समूहन — राजनीतिक दल		7. नियम — न्यायपालिका अधिनिर्णयन	
	4. राजनीतिक — जन-संचार संप्रेषण के साधन			

1. **राजनीतिक समाजीकरण एवं भर्ती :⇒** राजनीतिक प्रणाली के इस प्रतिरूप के अनुसार प्रथम आगत कृत्य है राजनीतिक समाजीकरण एवं भर्ती इसके अन्तर्गत सर्वप्रथम व्यक्ति अपने चारों ओर राजनीतिक प्रणाली के अस्तित्व के प्रति सजग होता है तथा यह सीखता है कि वह कैसे कैसे इस प्रणाली की सहायता से अपने हितों को साध सकता है। इस प्रक्रिया के तहत कोई व्यक्ति अपने समाज में प्रचलित राजनीतिक जीवन के प्रति दृष्टिकोण निर्मित करता है तथा समाज अपने राजनीतिक मूल्यों, आदर्शों एवं मान्यताओं को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाता है। इस कृत्य को संपादित करने वाली संरचनाएं हैं: परिवार, मित्र मंडली, कॉफी क्लब, शिक्षण संस्थाएं इत्यादि। दूसरा शब्द है भर्ती जिसके अन्तर्गत राजनीतिक समूह अपने लिए नये सदस्य बनाते हैं, पुराने सदस्यों की जगह नये सदस्य नियुक्त करते हैं।

2. **हित स्पष्टीकरण :⇒** इस प्रक्रिया के अन्तर्गत जनता के विचारों, अभिवृत्तियों, मान्यताओं और अधिमान्यताओं को राजनीतिक प्रणाली के समक्ष निश्चित मांगों के रूप में व्यक्त

Scanned with CamScanner

किया जाता है। इस कृत्य को संपादित करने वाली प्रमुख संरचना हित समूह हैं यद्यपि कि राजनीतिक दल एवं जनसंचार के साधन भी अपनी भूमिका निभाते हैं।

3. **हित समूहन :⇒** इस प्रक्रिया के अन्तर्गत विभिन्न समूहों की मांग एकजुट कर दी जाती है जिससे कि वे राजनीतिक सत्ताधारियों का ध्यान आकर्षित करने के लिए अधिक प्रभावशाली साबित हो सके। इस स्तर पर जनता की मांगें ऐसे मुद्दों का रूप धारण कर लेती हैं कि राजनीतिक प्रणाली को उन पर विचार एवं कार्यवाई करना आवश्यक हो जाता है। हित-समूहन का प्रमुख माध्यम राजनीतिक दल हैं।

4. **राजनीतिक संप्रेषण :⇒** इस प्रक्रिया के अन्तर्गत जनता की मांगें, समर्थन एवं विरोध प्रदर्शन को राजनीतिक प्रणाली तक पहुंचाया जाता है तथा राजनीतिक प्रणाली द्वारा इस संदर्भ में लिए गये निर्णयों को जनता तक पहुंचाया जाता है। इसके लिए उपयुक्त संरचना हैं जन-संचार के साधन। सीधे शब्दों में कहें तो राजनीतिक संप्रेषण राजनीतिक प्रणाली के आगत एवं निर्गत कृत्यों के बीच संपर्क सेतु का निर्माण करता है।

गेब्रियल ऑल्मंड ने राजनीतिक प्रणाली के तीन निर्गत कृत्य बताए हैं जो निम्नलिखित हैं :-

(1) नियम-निर्माण
(2) नियम-अनुप्रयोग
(3) नियम-अधिनिर्णयन

ये सभी कार्य सरकार के परंपरागत कार्य हैं जिन्हें शासन की परंपरागत संरचनाएं क्रमशः विधायिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका संपन्न करती हैं। चूंकि निर्गत के सभी कार्य सरकारी उपप्रणालियों करती हैं वहीं आगत के कृत्यों का संपादन अनौपचारिक संरचनाओं द्वारा होता है जिसके ऊपर परंपरागत अध्ययन में ध्यान नहीं दिया गया था। अतः आल्मंड का मुख्य उद्देश्य आगत से संबंधित इन अनौपचारिक संरचनाओं का अध्ययन प्रस्तुत करना है। ऑल्मंड ने अपने संरचनात्मक-कृत्यात्मक विश्लेषण के माध्यम से जिन कृत्यों का

Scanned with CamScanner

निर्धारण किया है वे राजनीतिक प्रणाली के मूलभूत कृत्य है। अगर कोई राजनीतिक प्रणाली इन कृत्यों को संपन्न नही करती है तो उसका अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा। वस्तुत: ऑल्मंड ने संरचनात्मक दृष्टि से एक विकसित राजनीतिक प्रणाली का प्रतिरूप प्रस्तुत किया है। इसकी सहायता से हम किसी भी विकासशील देश के राजनीतिक विकास के स्तर को माप सकते है, अत: ऑल्मंड ने अपने विश्लेषण को विकासात्मक उपागम की संज्ञा दी है

Scanned with CamScanner